International Conference on Social Science & Humanities Trends
April 2026

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
ISSN: 2584-2455

समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता

Akash Kumar
Department of Political science, N.M.S.N DASS P.G COLLEGE, Budaun, Uttar Pradesh

शोध सार

यह शोध-पत्र समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में पंडित जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। नेहरू भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे, जिनके राजनीतिक दर्शन ने आधुनिक भारत की राज्य-व्यवस्था, लोकतांत्रिक ढांचे और विदेश नीति की नींव रखी। उनके विचार लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा गुटनिरपेक्षता जैसे मूल सिद्धांतों पर आधारित थे।
वर्तमान वैश्विक एवं भारतीय राजनीतिक परिदृश्य—जहाँ एक ओर लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती और पारदर्शिता की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर सांप्रदायिकता, असमानता, वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ विद्यमान हैं—इन परिस्थितियों में नेहरू के विचारों की पुनर्व्याख्या और पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। उनका लोकतांत्रिक समाजवाद आज सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होता है। धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में नेहरू का दृष्टिकोण राज्य और धर्म के पृथक्करण तथा सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार पर आधारित था, जो वर्तमान समय में सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता बनाए रखने के लिए प्रासंगिक है। इसी प्रकार उनकी गुटनिरपेक्ष विदेश नीति आज बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में रणनीतिक स्वायत्तता (**Strategic Autonomy)** के रूप में परिलक्षित होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक संस्थानों के निर्माण पर उनका बल आज भी शिक्षा, अनुसंधान, तकनीकी विकास और नवाचार की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। हालांकि, आलोचनात्मक दृष्टि से यह भी देखा गया है कि उनकी नीतियों की कुछ सीमाएँ—जैसे अत्यधिक केंद्रीकरण या नियोजित अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ—समकालीन परिप्रेक्ष्य में नए विमर्श को जन्म देती हैं। अंततः यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि नेहरू के राजनीतिक विचार न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि वर्तमान भारतीय राजनीति और वैश्विक परिदृश्य में भी उनकी वैचारिक प्रासंगिकता बनी हुई है। उनके सिद्धांतों की समालोचनात्मक पुनर्व्याख्या समकालीन लोकतंत्र को अधिक समावेशी, प्रगतिशील और संतुलित बनाने में सहायक हो सकती है।

मुख्य शब्द (**Keywords):** जवाहरलाल नेहरू, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, वैश्विक राजनीति।

भूमिका

जवाहरलाल नेहरू (**1889-1964)** का परिचय केवल स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री होने तक सीमित नहीं है; वे एक कुशल राजनेता और दूरदर्शी विचारक भी थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात आधुनिक भारत के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक

ढांचे की आधारशिला रखी। उनके राजनीतिक विचार मुख्यतः लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रीय एकता, पंचशील और गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति पर केंद्रित थे। नेहरू ने इन विचारों को भारत की तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में ढाला।
वर्तमान काल में, जब भारतीय राजनीतिक परिदृश्य ध्रुवीकरण, बहुसंख्यकवाद, आर्थिक असमानता, डिजिटल विभाजन, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक भू-राजनीति से प्रभावित है, ऐसे में नेहरू के विचारों की प्रासंगिकता पर बहस होना स्वाभाविक है। जहाँ कुछ विद्वान उनके विचारों को पुरातन कहते हैं, वहीं दूसरा पक्ष यह मानता है कि लोकतंत्र की रक्षा के लिए उनके विचार वर्तमान समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने तत्कालीन समय में थे।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध-पत्र में शोध के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों जैसे–पुस्तकों, आत्मकथा, पूर्व के शोध कार्यों, लेखों और आधिकारिक दस्तावेजों का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण के लिए विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं: वर्तमान राजनीतिक चुनौतियों को समझने हेतु: आज के भारत में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। नेहरू के विचार इन चुनौतियों को समझने और समाधान खोजने में सहायक हो सकते हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण के लिए: नेहरू ने लोकतंत्र, स्वतंत्रता और समानता पर बल दिया। उनके विचारों का अध्ययन वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है।

धर्मनिरपेक्षता की प्रासंगिकता का मूल्यांकन: समकालीन समाज में बढ़ती धार्मिक असहिष्णुता के संदर्भ में नेहरू की धर्मनिरपेक्ष सोच का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है। समाजवाद और आर्थिक नीतियों की समीक्षा: वर्तमान आर्थिक नीतियों और बढ़ती असमानताओं के संदर्भ में नेहरू के समाजवादी दृष्टिकोण का अध्ययन उपयोगी हो सकता है। वैश्विक परिदृश्य में विदेश नीति का मार्गदर्शन: नेहरू की गुटनिरपेक्ष नीति (**Non-Alignment)** आज के वैश्विक तनाव और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संतुलन बनाने के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करती है।

नेहरू के प्रमुख राजनीतिक विचार

नेहरू के विचार उनकी पुस्तकों–'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' (भारत की खोज), 'विश्व इतिहास की झलक' और 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' तथा उनके ऐतिहासिक भाषणों एवं नीतियों से परिलक्षित होते हैं। उनके मुख्य विचार निम्नवत हैं:

1. **लोकतंत्र (**Democracy)

अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र की श्रेष्ठ परिभाषा दी है–"जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन"। नेहरू भी लोकतंत्र को केवल एक चुनावी प्रक्रिया नहीं मानते थे; उनके अनुसार लोकतंत्र तभी सार्थक है जब वह सामाजिक-आर्थिक समानता और संस्थागत मजबूती का माध्यम बने। उन्होंने संसदीय लोकतंत्र पर जोर दिया और

इसकी रक्षा हेतु स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र प्रेस और चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं को सशक्त करने की वकालत की।

2. **धर्मनिरपेक्षता (**Secularism)
सामान्यतः धर्मनिरपेक्षता से आशय यह लिया जाता है कि राज्य का अपना कोई धर्म न हो और राज्य नागरिकों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करे। लेकिन नेहरू की धर्मनिरपेक्षता राज्य की तटस्थता मात्र नहीं, बल्कि सभी धर्मों के प्रति समान दूरी और समान सम्मान (सर्वधर्म समभाव) की भावना थी। उन्होंने धार्मिक सांप्रदायिकता को राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे बड़ी चुनौती माना।

3. **लोकतांत्रिक समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था (**Democratic Socialism)
नेहरू ने पूँजीवाद और साम्यवाद की तुलनात्मक समीक्षा के आधार पर भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल मिश्रित मॉडल को अपनाया। उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं, सार्वजनिक क्षेत्र (**PSUs)** और भारी औद्योगिकीकरण के माध्यम से आर्थिक नियोजन को बढ़ावा दिया, ताकि गरीबी और असमानता को कम किया जा सके।

4. **राष्ट्रीय एकता और अनेकता में एकता (**Unity in Diversity)
भारत में अत्यधिक जातीय, धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताएँ विद्यमान थीं। नेहरू ने इस विविधता को कमजोरी के बजाय भारत की शक्ति के रूप में देखा। उन्होंने ऐसे संवैधानिक और नीतिगत प्रयास किए जिससे किसी भी वर्ग को असुरक्षा की भावना महसूस न हो और राष्ट्र की अखंडता बनी रहे।

5. **गुटनिरपेक्षता और विश्व शांति (**non-alignment)
द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात दुनिया दो गुटों में विभक्त हो गई–एक ओर अमेरिका के नेतृत्व वाला पूँजीवादी गुट और दूसरी ओर सोवियत संघ के नेतृत्व वाला साम्यवादी गुट। इस शीत युद्ध के दौर में नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (**NAM)** की नींव रखी। इसका अर्थ यह था कि भारत किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होकर एक स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करेगा, जो विकासशील देशों के लिए संप्रभुता का प्रतीक बना।
समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विश्लेषण
1. लोकतंत्र की मजबूती और संस्थागत संकट
नेहरू ने लोकतंत्र को एक "प्रशिक्षण" की प्रक्रिया माना था, जिसका उद्देश्य जनता को जिम्मेदार व जागरूक बनाना था, ताकि लोकतंत्र अपने सच्चे अर्थों में जीवित रहे। वर्तमान शताब्दी में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष कई प्रश्नचिह्न खड़े हैं–जैसे कमजोर विपक्ष, प्रेस पर बढ़ता दबाव, न्यायिक स्वतंत्रता पर बहस और चुनावों में धनबल का बढ़ता प्रयोग। ऐसे समय में नेहरू का संस्थागत लोकतंत्र (**Institutional Democracy)** का मॉडल अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा था कि–"लोकतंत्र केवल बहुमत का शासन नहीं, बल्कि अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा भी है।" वर्तमान में विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारियों और राजनीतिक प्रतिशोध के आरोपों के बीच नेहरू की यह चेतावनी लोकतंत्र की मर्यादा बनाए रखने के लिए दिशा-निर्देश देती है।

2. **धर्मनिरपेक्षता का संकट और बहुसंख्यकवाद**
21वीं शताब्दी में भारत में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, मंदिर-मस्जिद विवाद और अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना जैसी चुनौतियाँ बढ़ी हैं। ऐसी परिस्थितियों में नेहरू का धर्मनिरपेक्षता का विचार सबसे कड़ी परीक्षा से गुजर रहा है। वे कहा करते थे, "धर्म और राजनीति का गठजोड़ सबसे खतरनाक है।" जहाँ आज धर्म का उपयोग 'वोट बैंक' के रूप में किया जा रहा है, वहाँ नेहरू का "समान दूरी" (**Equal Distance**) का मॉडल शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। वैश्विक स्तर पर बढ़ते धार्मिक राष्ट्रवाद के दौर में नेहरू का समावेशी मॉडल ही विविधता वाले भारत को एकजुट रख सकता है।

3. **आर्थिक विचार: समाजवाद से उदारीकरण तक**
नेहरू ने स्वतंत्र भारत में समाजवादी मॉडल को अपनाया, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई। **1991** के **LPG** (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) सुधारों के बाद नेहरू की आर्थिक नीतियों की आलोचना हुई कि इससे विकास धीमा रहा। परंतु वर्तमान में जब भारत विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, तब भी गरीबी, उच्च बेरोजगारी और किसान संकट बरकरार है। अतः नेहरू की "मिश्रित अर्थव्यवस्था" आज भी प्रासंगिक है—जहाँ निजी क्षेत्र के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक निवेश (**Public Investment**) की सख्त जरूरत है। **2026** में जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के लक्ष्यों को पाने के लिए नेहरू का "योजना-आधारित विकास" (**Planned Development**) पुनः महत्वपूर्ण हो गया है।

4. **विदेश नीति: गुटनिरपेक्षता की नई प्रासंगिकता**
शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भले ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन (**NAM**) धीमा पड़ा हो, लेकिन वर्तमान 'यूक्रेन-रूस युद्ध', 'अमेरिका-चीन टकराव' और 'ईरान-इजराइल तनाव' के बीच भारत की "बहु-पक्षीय" (**Multi-aligned**) नीति नेहरू की गुटनिरपेक्षता से ही प्रेरित है। आज भारत एक ओर रूस से तेल खरीदता है, तो दूसरी ओर अमेरिका के साथ '**QUAD**' में सहयोग करता है और '**G20**' में 'ग्लोबल साउथ' का नेतृत्व करता है। नेहरू का "पंचशील" और "शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व" का सिद्धांत आज भी भारत की विदेश नीति का नैतिक आधार बना हुआ है।

नेहरू के राजनीतिक विचारों की आलोचना
समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न आलोचकों द्वारा नेहरू की नीतियों की निम्नलिखित बिंदुओं पर आलोचना की जाती है:

लाइसेंस-परमिट राज: कई अर्थशास्त्री उनकी समाजवादी नीतियों को धीमी आर्थिक वृद्धि और भ्रष्टाचार का कारण मानते हैं, जिससे निजी उद्यमों के विकास में बाधा आई।

गुटनिरपेक्षता की सीमाएँ: आलोचकों का तर्क है कि भारत व्यवहार में पूरी तरह निष्पक्ष नहीं रहा और कई बार सोवियत संघ की ओर अधिक झुकाव प्रदर्शित किया।

चीन नीति की विफलता: "हिंदी-चीनी भाई-भाई" का दृष्टिकोण **1962** के युद्ध में विफल साबित हुआ, जिसे नेहरू की एक बड़ी कूटनीतिक और सामरिक भूल माना जाता है।

कश्मीर मुद्दा: कश्मीर मामले को संयुक्त राष्ट्र (**UN**) में ले जाने के निर्णय को रणनीतिक गलती माना जाता है, जिससे यह समस्या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उलझ गई।

अत्यधिक आदर्शवाद: नेहरू पर आरोप लगता है कि उनकी राजनीति में व्यावहारिक यथार्थवाद (**Pragmatism**) की कमी थी और वे आदर्शों में अधिक खोये रहे।

रक्षा तैयारियों की अनदेखी: सैन्य आधुनिकीकरण के बजाय भारी उद्योगों और शांतिपूर्ण कूटनीति को प्राथमिकता देने के कारण **1962** में भारत को हार का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष

समकालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि उनके विचार आज भी भारतीय शासन व्यवस्था में आधारभूत स्थान रखते हैं। उन्होंने लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के जिन मूल्यों को स्थापित किया, वे आज की जटिल चुनौतियों के समाधान में भी उतने ही सक्षम हैं।

नेहरू के विचार पूर्णतः अप्रासंगिक नहीं हुए हैं, बल्कि वे वर्तमान संकटों का सामना करने का वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। नेहरू का भारत "आधुनिक, वैज्ञानिक और मानवीय" था। आज जब भारत एक "विकसित राष्ट्र" बनने की ओर अग्रसर है, उनके विचार हमें याद दिलाते हैं कि वास्तविक प्रगति केवल **GDP** के आंकड़ों में नहीं, बल्कि सामाजिक समानता, सहिष्णुता और लोकतंत्र की जड़ों की मजबूती में निहित है।

नेहरू ने कहा था: "हम जहाँ हैं, वहाँ से शुरू करते हैं।" वर्ष **2026** में भारत जिस मुकाम पर है, वहाँ से नेहरू के विचारों को नई परिस्थितियों के अनुरूप पुनः व्याख्यायित कर आगे बढ़ना होगा। उनकी प्रासंगिकता केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाली मार्गदर्शिका है।

सन्दर्भ सूची

1. **नेहरू, जवाहरलाल. (1929).** *पिता के पत्र पुत्री के नाम (Letters from a Father to His Daughter)*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
2. **नेहरू, जवाहरलाल. (1934).** *विश्व इतिहास की झलक (Glimpses of World History)*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. **नेहरू, जवाहरलाल. (1936).** *आत्मकथा (An Autobiography / Toward Freedom)*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. **नेहरू, जवाहरलाल. (1946).** *भारत की खोज (The Discovery of India)*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।

5. **नेहरू, जवाहरलाल. (2004).** *स्वतंत्रता से पूर्व: बहन को लिखे गए पत्र (1909–1947)* (नयनतारा सहगल, संपा.). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. **कुमार, नरेश. (2022).** राष्ट्रवाद के विशेष संदर्भ में जवाहरलाल नेहरू के विचारों का दार्शनिक आधार: एक सामान्य विश्लेषण. *रिसर्च रिव्यू: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी,* **7(7), 112–117.**
7. **खिलनानी, सुनील. (1997).** *भारत की संकल्पना (The Idea of India)*. फरार, स्ट्रॉस एंड गिरॉक्स।
8. **चक्रवर्ती, बिद्युत एवं पांडेय, राजेन्द्र के.** (संपा.). **(2010).** *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन: पाठ और संदर्भ.* सेज पब्लिकेशन्स।
9. **थरूर, शशि. (2003).** *नेहरू: भारत की कल्पना.* आर्केड पब्लिशिंग।
10. **दास, एम. एन. (1961).** *जवाहरलाल नेहरू का राजनीतिक दर्शन.* रूटलेज एंड केगन पॉल।
11. **पुरुषोत्तम, सुनील. (2016).** परमाणु युग में विश्व इतिहास: जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक चिंतन में अतीत, वर्तमान और भविष्य. *मॉडर्न इंटेलेक्चुअल हिस्ट्री,* **13(3), 689–717.**
12. **मलिक, प्रिया एवं बीरबल. (2017).** पंडित जवाहरलाल नेहरू के राजनीतिक विचारों पर एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ एडवांसेज़ एंड स्कॉलर्ली रिसर्चेस इन एलाइड एजुकेशन,* **12(2), 928–934.**
13. **हरिजन, जितेन्द्र. (2014).** जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल के राजनीतिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस, इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी,* **1(1), 110–114.**